विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 21-04-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

संस्कृत: प्रकृति भाव संधि

प्रकृति भाव संधि

संस्कृत व्याकरण में जब किसी संधि पद के अंतर्गत संधि योग्य दशा की प्राप्ति होने पर संध्या देश का प्रतिपादन नहीं होता है तब उसे व्याकरण में प्रकृति भाव संधि कहा जाता है

जैसे उ उमेश, इ इन्द्र, कृष्ण३ आगच्छ

प्रकृति भाव संधि/प्रगृहय संज्ञा करने वाला सूत्र = ईदूदेद् द्विव्चनं प्रगृह्यम् (उतर ऊत् एत् द्विवचनमं प्रगृह्यम्)

दीर्घ ईकारान्त/ऊकारान्त/एकारान्त + स्वर वर्ण = प्रकृति भाव/प्रगृह्य संज्ञा के कारण प्राप्त संधि आदेश बाधित हो जाता है

प्रकृति भाव संधि के उदाहरण

हरी एतौ = हरी + एतौ = ई + ए = प्रकृति भाव

विष्णू इमौ = विष्णु + इमौ = ऊ + इ = प्रकृति भाव

गंगे अनू =गंगे + अमू = ए + अ = प्रकृति भाव

गो + अग्रम = गो अग्रम = ओ + अ = प्रकृति भाव

अमी + अश्वा = अमी अश्वा = ई + अ = प्रकृति भाव संधि

अहो + ईशा = अहो ईशा = आ + अ = प्रकृति भाव संधि

इन सभी उदाहरणों में यणादेश संधि, अयादिआदेश संधि बाधित हो जाती है।